"धरतीपर स्वर्गः महर्षि अरविन्द के परिप्रेक्ष्य में"

चिन्तनशील मनुष्य की सब से बड़ी समस्या यह है कि मानव जीवन का सम्यक आदर्श क्या हो सकता है? इसी सम्यक आदर्श की खोज में हमारे यहाँ विचारको ने अलग मार्ग अपनाकर चिन्तन किया है। उन्ही में से एक महर्षि अरविन्द भी है। भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच सम्यक सामंजस्य कैसे हो? आत्मा का विकास हो उसके साथ साथ शरीर भी हुआ है। विज्ञान, मनोविज्ञान आत्मानुशासन का साधन हो सकता है कि नहीं इस पर भी विचार करना आवश्यक लगता है पर यह विकास इस कदर हो कि हर विज्ञान के विकास के साथ साथ जीवन में आध्यात्मिक ध्येय की अभिर्प्यक्ति भी हो सके। ज्ञान और विज्ञान का जब सम्यक उपयोग होगा तभी तो मनुष्य के लिए वह कल्याणकारी होगा। अपनी सम्यक दृष्टि की खोज में जब महर्षि अपने साधना मन्दिर में प्रवेश करते हैं तब उनकी चिन्ता भारतवर्ष तक ही सीमित न रहते हुए समस्त मानव जात का विचार करती दृष्टव्य होती है। सारा विश्व ही, उनके विचार से रुपान्तरण की अवस्था से गुजरता हुआ विकसनशील हो रहा है। इस अवस्था से गुड़रते हुए हमें पश्चिमी शक्तियों को ग्रहण करना हैं। इस के बाद वाली जो अवस्था आयेगी उस से समस्त मानव जात का कल्याण ही होगा।

उनके चिन्तन में दो बातें मुख्य हैं-एक ब्रम्ह और जगत् - दोनो सत्य है।

दूसरी यह कि मनुष्य और जगत् में एक विकास की प्रक्रिया हो रही है। यह जगत् निवर्तन-विवर्तन अथवा अवरोहण-आरोहणात्मक है।

अवरोहण का सोपानक्रम-सत् चित् आन्द - अतिमानस - मानस - मानस - जीव - प्राण - जड़ तत्व मैटर। विवर्तन अथवा विकास का क्रम इससे ठीक उल्टा है। मनुष्य जड़ से जीव-कोटि में आया। सोचने की शक्ति के कारण वह मानव-कोटि में आया। फिर भी जड़ उसके साथ है और जीव ते वह है ही। पर उसका व्यक्तित्व पशुओं से भिन्न हो गया है क्योंकि पशु सोच नहीं सकता मनुष्य सोच सकता है। सोचने की शक्ति ही मानस है और मानस-अतिमानस के भी साथ रहेगा। अतिमानस की सार्थकता यह होगी कि वह सोचने में गलती नहीं करेगा। प्रत्येक ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान का रुप ले लेगा और मन को भूल करने का अवसर ही नही मिलेगा। अर्थात चेतना का संचार होगा और मनुष्य के लिए इस पृथ्वी पर नये जीवन का समारंभ होगा।

महर्षि अरविन्द बुद्धि को विकास का साधन तो मानते हैं पर उसकी अराजकतासे भी अवगत कराते हैं। अगर हमारी बुद्धि सिर्फ आर्थिक और भौतिक बिन्दुओंपर ही सोघती रही तो विज्ञान की शक्ति से हम आधिभौतिक जीवन में तो विकास करेंगे पर आन्तरिक रुप से खोखुले होते जायेंगे। आज का हमारा जीवन हर भौतिक चीज को पाने की इच्छा करता है और ऐसी इच्छाओं का कोई अन्त होता दिखाई नहीं देता। व्यष्टि और समष्टि आपस में टकरा रहे हैं। बुद्धि के साथ सम्बुद्धि भी आवश्यक है ऐसा उनका विचार है। बुद्धि विश्लेषण पद्धति परचलती है और संश्लिष्ट ज्ञान प्राप्त नहीं होता। बुद्धि से प्राप्त ज्ञान सतुही होता है और सतेहका यह ज्ञान विभाजन का होता है ऐसे विभाजित तत्वों की उपलब्धियोंको महर्षि आरविन्द उपलब्धि मानने के लिये तैयार नहीं है। सारा ब्रह्मांड एक संशलिष्ट स्वरुप है और यह एकत्व का सहज ज्ञान सम्बुद्धि से ही संभव है। हमारे यहां द्रष्टा, ऋषियों ने संश्लेषण मार्ग द्वारा ही सम्बुद्धि को आधार बनाकर सत्यान्वेषण किया। लेकिन इनकी दृष्टि में चिन्ता मानव जगत् की ही लक्षित होती है। किसी भी एकांगी दृष्टि से अतिमानस की प्राप्ति संभवित होती नहीं है ऐसा उनका मानना है। विकास की इवोल्यूशन प्रक्रिया में मनुष्य मानने लगेला कि सर्व मनुष्य उसका अपना ही अंश है इतना ही नहीं इस सत्य का अनुभव भी उसे होगा। अविमानस के प्रस्फूटित होते ही पृथ्वीपर अति मानवों की दिव्य मानवता का उदय होगा। प्रस्तुत मानव जितना पशु से उंचा है उतनी ही उच्चतर वह संस्कृति होगी जो आज की मानव संस्कृति से बेहतर होगी। उस समय मनुष्य अपनी मन-बुद्धि का अतिक्रमण करके अमिानस चेतना में प्रवेश करेगा और शारीरिक मृत्युपर भी विजय प्राप्त कर लेगा।

Thanks To : **Shah Builders., Pune.**

यह दर्शन और योग अतिमानस के अवतरण के लिये उपयुक्त और वांछित भूमि तैयार करना चाहता है। मनुष्य के भीतर जड़ तत्त्व, प्राण और मानस के परे एक आभ्यंतर तत्व है और वह दिव्य मानस। सतही मानस की अपेक्षा बहुत ही नमनशील, शक्तियुक्त और क्षमतायुक्त है। प्रकाश प्रेम आनन्द और सत्ता का यह सूक्ष्म तत्त्व चैत्य पुरुष है। हमारी मनोमय आत्मा के परे हमारी सत्ता का केन्द्र स्थित है। यही हमारी आत्मा है। इस योग में उस चैत्य तत्व को जाग्रत करना अनिवार्य है। समग्र मानवता को उसके सभी अंश में दिव्य स्तर पर रुपान्तरित कर डालना है। महर्षि अरविन्द और महात्मा गांधी के उद्देश्य समान है पर उनके साधनो में भेद है। साधन-भेद के कारण उद्देश्य भिन्न दिखायी देते हैं। दोनों मूल उद्देश्य मानव स्वभाव को निर्मल बनाकर आज की अपेक्षा अधिक सुन्दर और सुखद, पवित्र विश्व निर्माण करना है। महर्षी का नया विश्व तब आयेगा जब मनुष्य मानस की स्थिति से उठकर अतिमानस की स्थितिमें पहुंचेगा जबकि महात्माजी का मानना है यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको सुधारले, तो पृथ्वी स्वयमेव स्वर्ग बन जायेगी।

अनुवादक : ***चंद्रलेखा द सौझा***

◆ ◆ ◆

The farther I go,
the nearer shall I be
for each one of you.
this is a promise.

The Man of Perfection alone
"ACTS".
We all, but
"REACT"
in the world.